



शोध भूमि

शिक्षा एवं शिक्षण शास्त्र विषय की पूर्व समीक्षित शोध पत्रिका

वैदिक काल से मध्यकाल तक हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के विकास में महिला कलाकारों का योगदान: एक ऐतिहासिक अध्ययन।

डॉ. बलबीर चंद

सहायक प्रवक्ता

संगीत विभाग (वाद्य)

एस. वी. जी. सी. घुमारवीं, बिलासपुर, हिमाचल प्रदेश, भारत

ईमेल: balbirduv@gmail.com

सारांश

भारतीय शास्त्रीय संगीत एक ऐसा क्षेत्र है जिसमें सार्वजनिक रूप से पुरुषों का वर्चस्व रहा है, लेकिन समय के साथ-साथ महिलाओं ने भी इस क्षेत्र में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है तथा भारतीय शास्त्रीय संगीत ने अपने समृद्ध विरासत में महिलाओं के योगदान को स्वीकार भी किया है। वैदिक काल से ही भारतीय संगीत कला के इतिहास को मान्यता प्राप्त है। यज्ञ और अन्य अवसरों पर पुरुषों व सामगायकों के साथ-साथ स्त्रियाँ भी सहयोग किया करती थीं। दास कुमारियों द्वारा गाथाओं के साथ नृत्य और गायन भी किया जाता था। महिलाओं का विशेष सहयोग संगीत संबंधी सभी अवसरों पर होता था। ऋग्वेद में स्त्रियों के गायन और नृत्य के विषय में विस्तार से चर्चा की गई है। प्रारम्भ से लेकर आधुनिक काल तक भारतीय शास्त्रीय संगीत के उत्थान में महिला कलाकारों ने अपनी योग्यता और सृजनशीलता से एक महत्वपूर्ण और सकारात्मक भूमिका निभाई है। इस कला में महिलाएं अपनी भावनाओं, साहित्यिक अभिव्यक्ति, और साहस के माध्यम से संगीत को नए आयाम देने में सक्षम रही हैं। महिला कलाकारों ने शास्त्रीय संगीत के प्रचार-प्रसार में भी एक महत्वपूर्ण योगदान दिया है। सांस्कृतिक और सामाजिक पहचान के साथ-साथ महिलाएं शास्त्रीय संगीत के विभिन्न पहलुओं में विकसित हो रही हैं। अपनी मेहनत और कठोर अभ्यास से गायन, वादन एवं नृत्य के माध्यम से उन्होंने संगीत को नए रूपों में प्रस्तुत किया है और इसे समृद्धि, साहित्यिकता, और सामाजिक समस्याओं पर ध्यान केंद्रित करके बढ़ावा दिया है। उनका योगदान संगीत समुदाय को और भी विविध और समृद्धिशील बनाने में मदद कर रहा है।

शास्त्रीय संगीत में महिलाओं का योगदान सिर्फ एक क्षेत्रीय बदलाव नहीं है, बल्कि यह एक सामाजिक परिवर्तन का भी प्रतीक है। इस अध्ययन में, हम महिला कलाकारों के संगीतीय योगदान की महत्वपूर्णता को विशेष रूप से उजागर करेंगे, जो भारतीय संगीत के विभिन्न पहलुओं में उभरा हैं। इस लेख में उनकी अद्वितीय कला, साहसिकता तथा सामाजिक परिवर्तन में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका को विशेष रूप से रेखांकित करते हुए उनके संगीतमय योगदान का समग्र परिदृश्य प्रस्तुत किया जा रहा है। यह शोधपत्र भारतीय संगीत की महिला कलाकारों के प्रति उत्साह और सम्मान को बढ़ावा देने का एक प्रयास है और

हिन्दुस्तानी संगीत कला में महिला संगीतज्ञों का क्या योगदान है तथा अब तक क्या योगदान रहा है, इसे दृष्टिगोचर करने का प्रयास करता है।

मुख्य बिन्दु: भारतीय कला, शास्त्रीय संगीत, महिला कलाकार, सामाजिक परिवर्तन, लोकप्रियता, अद्वितीय कला, संगीतकार, साहसिकता, सांगीतिक योगदान।

भूमिका:

भारतीय शास्त्रीय संगीत एक विशेष परंपरा और सांस्कृतिक धारा है जो समय के साथ अपनी विविधता और गहराई से निकली है। इस संगीत के विकास में महिलाओं का महत्वपूर्ण योगदान है, जिसने इसे और भी समृद्ध बनाया है। भारतीय संगीत का इतिहास लम्बे समय से चला आ रहा है और इसमें महिलाओं की भूमिका समय-समय पर प्रमुख रही है। भारतीय शास्त्रीय संगीत के उदय के समय, विभिन्न स्थानों पर महिलाओं की संगीत की दिशा में अग्रणी भूमिका रही हैं जिन्होंने अपनी कला के माध्यम से समाज को प्रभावित किया। भारतीय संगीत में महिलाओं का उल्लेख सदियों से होता आ रहा है, उस समय उन्हें नायिकाओं के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका मिलती थी। वे धर्म, सामाजिक और सांस्कृतिक कार्यों में सक्रिय थीं। उत्तर भारत में, खासतौर पर गायन और वादन के क्षेत्र में, महिलाओं ने अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन बखूबी किया है। उन्होंने अपने स्वरों की मधुरता और भावनाओं के साथ महान कलाकारों की परंपरा को जारी रखा। महिला कलाकारों ने न केवल शास्त्रीय संगीत में अपना योगदान दिया है, बल्कि उन्होंने लोक संगीत, भजन, ठुमरी, और अन्य विभिन्न शैलियों में भी अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया है। उन्होंने संगीत के माध्यम से समाज में संवेदनशीलता और सामाजिक परिवर्तन को बढ़ावा दिया है। महिलाओं का यह योगदान भारतीय संगीत के समृद्ध विरासत, शास्त्रीय संगीत के प्रचार और विकास में महिला कलाकारों के बहुमुखी योगदान में एक महत्वपूर्ण अध्याय है और यह उनकी अद्भुत कला और साहसिकता का प्रतीक है। कलाकार के रूप में उनकी उपस्थिति से आगे बढ़ते हुए, यह उनके प्रभाव की गहराई को उजागर करता है, जिसमें सामाजिक बाधाओं को तोड़ने से लेकर कला को सद्गुण, शिक्षाशास्त्र और नवीनता के साथ समृद्ध करना शामिल है।

शोध-अंतराल

भारतीय शास्त्रीय संगीत में महिला संगीतज्ञों के योगदान पर उपलब्ध साहित्य प्रायः विशिष्ट कलाकारों, घरानों अथवा संगीत की किसी एक विधा तक ही सीमित दिखाई देता है। इतिहास के विभिन्न चरणों—जैसे वैदिक काल, मध्यकाल, औपनिवेशिक काल में महिलाओं को अनेक सामाजिक, सांस्कृतिक और संरचनात्मक बाधाओं का सामना करना पड़ा। इन परिस्थितियों के बावजूद उन्होंने संगीत-साधना को निरंतर बनाए रखा तथा भारतीय संगीत की परंपरा को संरक्षित, समृद्ध और विकसित करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। वैदिक काल से मध्यकाल तक गायन, वादन एवं नृत्य के क्षेत्र में महिलाओं की निरंतर भूमिका, उनके योगदान, सामाजिक चुनौतियों तथा भारतीय संगीत परंपरा के संरक्षण एवं विकास में उनकी भूमिका का समग्र, तुलनात्मक और ऐतिहासिक विश्लेषण अपेक्षाकृत कम उपलब्ध है। इस ऐतिहासिक यात्रा का व्यापक एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन अभी भी अपेक्षित है। संगीत शिक्षा के प्रसार, गुरु-शिष्य परंपरा के संरक्षण, कलाकारों के प्रशिक्षण, महिला सशक्तिकरण तथा सामाजिक-सांस्कृतिक परिवर्तन में उनकी निभाई गई भूमिका पर समग्र शोध की आवश्यकता बनी हुई है।

प्रस्तुत शोध का उद्देश्य उपर्युक्त शोध-अंतराल को ध्यान में रखते हुए भारतीय संगीत कला के विकास में महिला संगीतज्ञों के बहुआयामी योगदान का ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, सामाजिक तथा सांगीतिक परिप्रेक्ष्य में समग्र विश्लेषण प्रस्तुत करना है। इस अध्ययन में गायन, वादन और नृत्यकृतीनों क्षेत्रों में महिला कलाकारों की भूमिका का मूल्यांकन करते हुए यह स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है कि भारतीय संगीत की समृद्ध परंपरा के निर्माण, संरक्षण और निरंतर विकास में महिलाओं की भूमिका केवल सहयोगात्मक नहीं रही, बल्कि उन्होंने अपनी सृजनात्मकता, साधना

और नवीन तकनीक के माध्यम से भारतीय संगीत को नई दिशा, व्यापक पहचान तथा वैश्विक प्रतिष्ठा प्रदान की है।

शोध-कार्यप्रणाली

यह अध्ययन गुणात्मक अनुसंधान पद्धति पर आधारित है, जिसमें भारतीय संगीत कला में महिला संगीतज्ञों के योगदान का परीक्षण ऐतिहासिक, वर्णनात्मक तथा विश्लेषणात्मक दृष्टिकोणों के समन्वित प्रयोग द्वारा किया गया है। अध्ययन का उद्देश्य विभिन्न ऐतिहासिक कालों में महिला संगीतज्ञों की भूमिका, उनके सांगीतिक योगदान तथा भारतीय संगीत परंपरा के विकास में उनकी सहभागिता का व्यवस्थित एवं समग्र मूल्यांकन करना है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए वैदिक काल से लेकर मध्यकाल तक उपलब्ध ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक साक्ष्यों का क्रमबद्ध अध्ययन किया गया है।

शोध के लिए आवश्यक तथ्य एवं सामग्री का संकलन मुख्यतः द्वितीयक स्रोतों से किया गया है। इन स्रोतों में वैदिक एवं उत्तरवैदिक साहित्य, रामायण, महाभारत, पुराण, बौद्ध एवं जैन ग्रंथ, संगीत विषयक प्रामाणिक पुस्तकें, शोध-प्रबंध, समीक्षित एवं यूजीसी-केयर सूचीबद्ध शोध-जर्नलों में प्रकाशित शोध-लेख, सरकारी एवं संस्थागत प्रकाशन तथा प्रतिष्ठित महिला संगीतज्ञों से संबंधित प्रामाणिक जीवन-वृत्त एवं संदर्भ सामग्री सम्मिलित हैं।

संकलित सामग्री का विषयवस्तु-आधारित वर्गीकरण कर उसका तुलनात्मक, आलोचनात्मक तथा व्याख्यात्मक विश्लेषण किया गया है। इस विश्लेषण के आधार पर भारतीय शास्त्रीय संगीत के संरक्षण, संवर्धन, विकास में महिला संगीतज्ञों के बहुआयामी योगदान का निष्पक्ष, तथ्याधारित एवं समग्र मूल्यांकन प्रस्तुत किया गया है।

वैदिक काल में महिलाओं का संगीत में योगदान –

शास्त्रीय संगीत एक ऐसी कला है जिसमें स्वर, ताल, राग और रस का मिश्रण होता है। इसमें अनेक प्रकार के वाद्ययंत्र, गायन और नृत्य का समावेश होता है। शास्त्रीय संगीत का उद्गम वेदों में मिलता है और यह भारतीय संस्कृति का अभिन्न हिस्सा है। प्राचीन समय से ही इसे गुरुकुल पद्धति में सीखा जाता रहा है और यह एक परंपरागत विद्या प्रणाली का प्रतीक है। प्राचीन समय से ही महिलाओं ने संगीत में महत्वपूर्ण योगदान के द्वारा अपनी अलग पहचान बनाई है। वैदिक युग से ही संगीत में दक्षता नारी का विशेष गुण समझा जाता रहा है। वैदिक काल में गृहस्थ कार्यों के अतिरिक्त संगीत की शिक्षा ही उसकी सांस्कृतिक उन्नति का आधार थी। ऋग्वेद में नारी के गान एवं नृत्य का उल्लेख प्राप्त होता है।

“समुत्वा धीमिरस्वरन्दिन्वती स।

प्रजामयः विप्रभाजा विवस्वतः” ।।1

तथा

“ऋषि पेशांसि वपेत नृतुरि।

वापोशतुर्वक्ष उस्त्रोव वर्जदम” ।।2

यजुर्वेद तथा अथर्ववेद में भी गायन, वादन तथा नृत्य में नारी की भूमिका का वर्णन प्राप्त होता है। वैदिक काल में महिलाएँ सामवेद के मंत्रों का गायन करती थीं तथा धार्मिक एवं सांस्कृतिक अनुष्ठानों में सक्रिय भाग लेती थीं। ‘शतपथ ब्राह्मण’, ‘तैत्तरीय संहिता’, और ‘मैत्राणी संहिता’, आदि ग्रंथों में सामगान स्त्रियों का विशेष कार्य माना जाता था। गार्गी, मैत्रेयी और लोपामुद्रा जैसी विदुषी महिलाओं ने वैदिक मंत्रों, सामगान तथा धार्मिक अनुष्ठानों में अपनी विद्वत्ता और संगीत-ज्ञान का परिचय दिया। सूत्र साहित्य समाज के धार्मिक पक्ष को उजागर करता है। उससे यह स्पष्ट होता है कि सामगान में पुरुषों के साथ उनकी स्त्रियाँ तदनुकूल गायन एवं वादन करती थीं। दास कुमारियाँ भी यज्ञ के अवसर पर ‘उदकुम्भ शीर्ष’ नृत्य तथा गाथाओं का गायन करती थीं।

प्रागैतिहासिक काल से प्रवाहित संगीत की धारा रामायण काल में भी अपनी सहज गति से आगे बढ़ती गयी जिसका उत्तरदायित्व नारी ने ही वहन किया। रावण की पत्नी मन्दोदरी तथा अन्तःपुर की अन्य स्त्रियाँ भी इन कलाओं में निपुण थी। दिव्यांगना अप्सराओं के नृत्य एवं गंधर्वों के गायन का रामायण में प्रचुर उल्लेख देखने को मिलता है।

ननृतुश्चाप्सरः सङ्घा गन्धर्वाश्च जगुः कलम।

अर्थात् राम लक्ष्मणादि चारों भाईयों के विवाह के उपलक्ष्य में “अप्सराओं के समूह नृत्य करने लगे तथा गंधर्वों ने मधुर गान किया।”

रामायण काल से महिलाओं में संगीत के प्रति जो रुचि जाग्रत हुयी थी उसका पूर्ण विकास महाभारत काल में हुआ। महाभारत में प्राचीन भारतीय सभ्यता व संस्कृति का भव्य रूप जिस प्रकार से प्राप्त होता है, वैसा अन्य ग्रंथों में नहीं। यह ग्रंथ भारतीय संगीत एवं संस्कृति की गौरवशाली परंपरा और गरिमा का परिचायक है। व्यास जी द्वारा रचित महाभारत को पंचम वेद माना जाता है। इस काल में भगवान श्रीकृष्ण जी एक महान बाँसुरी-वादक के रूप में विख्यात हुए तथा श्रीराधा एक उत्कृष्ट नृत्यांगना के रूप में प्रसिद्ध थीं। राधा जी से संबंधित एक लोकप्रचलित कहावत आज भी प्रचलित है- “न नौ मन तेल होगा, न राधा नाचेगी।”

अर्जुन ने वृहन्नला बनकर नृत्य की शिक्षा राजा विराट की पुत्री उत्तरा को प्रदान की थी। क्षत्रिय स्त्रियाँ नृत्य व संगीत कला मर्मज्ञा तो थी ही अभिजात वर्ग भी इससे अछूता नहीं था। यज्ञ, विवाह, पुत्र जन्मोत्सव के समय नट-नर्तकियों नृत्य व गायन, वादन द्वारा अपनी कला का प्रदर्शन करते थे। इस प्रकार प्रत्येक शुभ अवसर पर इनकी उपस्थिति का उल्लेख प्राप्त होता है। उस काल में राज्य की ओर से संगीत शिक्षा का प्रबंध किया जाता था। समाज में स्त्री रूपी संगीत गुरु का भी सम्माननीय स्थान था। उस समय राजाओं ने नर्तनागार तथा संगीतशालाएं बनवा रखी थी जिसमें बालिकाओं को गायन, वादन एवं नृत्य इत्यादि की शिक्षा दी जाती थी, अतः महाभारत काल में नारियों का संगीत व नृत्य में महत्वपूर्ण योगदान था।

बौद्धकाल में भी नारियों की संगीत व नृत्य के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका रही है। ‘थेरीगाथा’ बौद्ध साहित्य का एक महत्वपूर्ण ग्रंथ है, जिसमें 97 विदुषी भिक्षुणियों द्वारा रचित गाथाओं (गीतों) का संग्रह संकलित है, जो ज्ञान एवं सदाचारिता की दृष्टि से किसी भी बौद्ध से कम नहीं थी। जैन ग्रंथों में कला को राजश्रय प्राप्त होना वर्णित है। राजा उदयन की पत्नी नृत्य कला विशारद थी। प्राचीन द्रविड़ संगीत ग्रंथ ‘शिलप्पदिकारम्’ की नायिका माधवी एक प्रसिद्ध नृत्यांगना एवं संगीतज्ञ थी।

भारतीय इतिहास के स्वर्ण युग गुप्त साम्राज्य में मालविका एवं शर्मिष्ठा ने नृत्य एवं संगीत के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया। महाकवि कालीदास द्वारा रचित ‘मालविकाग्निमित्रम्’ में इसके प्रमाण मिलते हैं।

प्राचीन काल में स्त्रियों द्वारा भगवान को प्रसन्न करने के लिए नृत्य एवं गायन किया जाता था। मन्दिरों के नृत्य पवित्र और धार्मिक होते थे। इस नृत्यकला का दायित्व जिन स्त्रियों को सौंपा गया था, उन्हें देवदासी या ‘देवार अड़पात’ अर्थात् ईश्वर की आराधिका कहा जाता था। दक्षिण भारत के मंदिरों की देवदासी प्रथा इसी का प्रतीक है। मंदिरों में ईश्वर की पूजा हेतु तथा उसे प्रसन्न करने के लिए, ईश्वर के समक्ष ये देवदासियाँ जो बाल्यकाल से ही ईश्वर की पत्नियाँ कही जाती थीं, नृत्य एवं गायन करती थीं। कौटिल्य के अर्थशास्त्र में पहली बार ‘देवदासी’ शब्द मिलता है। राजतरंगिणी, कुट्टनीमतम् और कथासरितम् इत्यादि साहित्यिक रचनाओं में भी देवदासी शब्द का प्रयोग हुआ है। दक्षिण भारत के चोल राजाओं के काल में छठवीं से तेरहवीं शताब्दी में बड़े-बड़े मंदिरों का निर्माण हुआ जिनमें हिन्दू देवताओं की मूर्तियाँ थीं। विष्णु व शिव के पवित्र तीर्थ स्थलों से ही पवित्र धार्मिक संगीत विकसित हुआ जो कि कलाओं का संयोग था।

देवलोक में जिस कार्य का सम्पादन रम्भा, उर्वशी, मेनका आदि अप्सराएँ करती थीं, मृत्युलोक में वहीं कार्य देवदासियों का माना जाता था। दक्षिण भारत एवं उड़ीसा के मंदिरों में देवदासियों द्वारा प्रस्तुत नृत्य एवं संगीत, अनिवार्य धार्मिक क्रिया-कलापों तथा अनुष्ठानों के अभिन्न अंग के रूप में संपन्न किए जाते थे। स्कन्द पुराण, पद्म पुराण, विष्णु पुराण, वामदेव संहिता, नीलाद्रि-महोदय तथा गोपाल-पल्लव आदि ग्रंथों में देवताओं के प्रसादन हेतु संगीत एवं नृत्य को अनिवार्य भेंट के रूप में अभिहित किया गया है। भारत में स्थित प्राचीन मंदिरों की दीवारों पर अंकित मूर्तियों में गायन, वादन तथा नृत्य के विविध दृश्य एवं उनके साक्ष्य दृष्टिगोचर होते हैं।

ब्रह्मेश्वर मन्दिर में खुदे हुए लेख स्पष्ट रूप से वर्णन करते हैं कि ईसा की दसवीं शताब्दी में कलावती देवी ने, जो कि केशरी वंश के राजा उद्यतकेशरी की जननी थीं, भगवान शिव की सेवा के लिए सुन्दर नृत्य करने वाली लड़कियों को समर्पित किया था। इन नृत्यांगनाओं के चरित्र के संबंध में कलावती देवी द्वारा किया गया एक उल्लेख ब्रह्मेश्वर मंदिर की दीवारों पर इस प्रकार अंकित है—

सत्नालक तियूषितांगसुषमा दैदीप्यमाना

क्रीडन्त्य स्तहितः स्थिरा इव कुवश्रोणी मरावव्याकुलाः ।

(सुन्दर्योक्षिद्ध) कनीनिकां (का) इव दुशामन्त्रः प्रतिष्ठा

न.णा तस्मलकअनाभ (भ्र) नयना दत्तास्थिया दारिका ।।

पौराणिक कवि जयदेव की पत्नी पदमावती जो नृत्य एवं संगीत में दक्ष थी उसने देवदासी के रूप में सेवा करने के लिए जगन्नाथ मन्दिर में अपने आपको सर्वतोभावेन अर्पित कर दिया। इसी प्रकार तंजावुर के चोल राजा रय्या के मंदिरों में 400 नृत्य व गायन करने वाली महिलाओं की नियुक्ति का उल्लेख मन्दिर से सम्बन्धित पांडुलिपि में मिलता है। कालिदास ने मेघदूत में उज्जयिनी के महाकाल मन्दिर में नृत्य व गायन करने वाली कन्याओं का उल्लेख किया है। सोमनाथ मन्दिर में तो पाँच सौ स्त्रियों का वर्णन है। नवीं शताब्दी में लिखे गये दक्षिण के कई ग्रन्थों में भी इसका वर्णन है। यद्यपि संगीत कला भगवान की उपासना का सबसे उत्तम माध्यम होने के कारण महिलाओं द्वारा किया जाने वाला गायन व नृत्य भगवत-सेवा के लिए पवित्र माना जाता था। ये स्त्रियाँ अपनी उत्कृष्ट कलात्मक प्रतिभा के कारण समाज में सम्मान एवं आदर की पात्र मानी जाती थीं।

‘पूजिता सा सदा राज्ञा गुणावाग्दश्व सूस्तुता।’

वर्तमान में संगीत कला का स्वरूप पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरण के द्वारा प्राप्त हुआ है। जिसका उत्तरदायित्व नारी ने वहन किया। इसलिए संगीत जगत में नारी की महत्ता सिद्ध है। वैदिक युग में स्त्रियाँ संगीत में निपुण न होती तो उनको वेदों में इतना महत्वपूर्ण स्थान न दिया जाता। संगीत का स्वरूप देशी हो या मार्गी परन्तु संगीत में नारी की भूमिका से सौन्दर्यबोध का अनुभव होता है। महिलाओं के योगदान के कारण भारतीय संगीत की समृद्ध परंपरा सुरक्षित रही और आने वाली पीढ़ियों तक उसका विकास निरंतर होता रहा। इसलिए भारतीय संगीत के इतिहास में प्राचीन काल से ही महिलाओं का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण, प्रेरणादायक और अविस्मरणीय है।

मध्यकाल में महिलाओं का संगीत में योगदान

गुप्तकाल से मुगल साम्राज्य के पतन तक भारतीय संगीत का इतिहास एक ओर नारी के त्याग, समर्पण और सांस्कृतिक योगदान का साक्षी है, तो दूसरी ओर सामाजिक एवं राजनीतिक परिस्थितियों के कारण उसके क्रमिक पराधीनता, उपेक्षा और घर की चारदीवारी तक सीमित हो जाने की मार्मिक गाथा भी प्रस्तुत करता है। मध्ययुग में डावांडोल राजनैतिक स्थिति का प्रभाव देश की सामाजिक, आर्थिक स्थितियों पर पड़ा। लगातार विदेशी आक्रमणों एवं भिन्न सांस्कृतिक परिवेश के साथ भारत में मुगलों के आगमन से, पहले संघर्ष फिर भारतीय परम्परा और संस्कृति

का स्वरूप परिवर्तित हुआ। स्त्रियों की स्थिति में भी परिवर्तन आया। पर्दा प्रथा का प्रचलन प्रारम्भ हुआ जिससे नारी का दायरा सीमित होने लगा। नारी की सामाजिक स्थिति बदलने लगी। मुसलमानों के वर्चस्व का जितना असर पुरुषों की स्थिति पर दिखायी देता है, स्त्रियों की अधीनस्थ की भूमिका ने उसे क्रमशः अवनति की ओर अग्रसर किया। इस युग के आते ही स्त्री के दिव्य गुण धीरे-धीरे उसके अवगुण बनने लगे। यह कबीर, सूर, तुलसी जैसे क्रान्तिकारी भक्त कवियों का जमाना था। इन्होंने भी नारी को ढोल, गंवार, शूद्र और पशु की कोटि में रखकर प्रताड़ना का अधिकारी ही समझा। जो स्त्रियाँ वैदिक युग में धर्म और समाज का प्राण थीं, उन्हें श्रुति का पाठ करने के अयोग्य घोषित किया गया। वैदिक युग का दृष्टिकोण स्त्री के प्रति दिव्य कल्पनाओं तथा पुनीत भावनाओं से परिवेष्टित था, जो धीरे-धीरे पूर्णतया बदल चुका था। नारी भोग और वासना का विषय बन गई। राजाओं और नवाबों के राजदरबारों में नारी शोभायमान होने लगी। नर्तकियों को देवालयों से उठाकर शाही दरबारों में लाया गया, वस्तुतः अब महिलायें मंदिर की सेविकाओं के बजाय मुस्लिम दरबारों में राजाओं के मनोरंजन का साधन मात्र बन कर रह गयीं। संगीत व कामकला के शिक्षा की व्यवस्था राज्य की ओर से प्रदान की जाने लगी। अतः इस समय गायन, वादन तथा नृत्य में नारी की स्थिति राजसी व तामसी प्रवृत्ति के समीप पहुंच गई। विलासिता के साथ अश्लीलता ने भी कदम रखा। इसके कदमों की आहट सुनकर संग्राम परिवारों की महिलाओं पर पटाक्षेप हो गया और उनकी कला चारदीवारी में ही घुटकर रह गई। अब संगीत विलासी राजाओं और उनका मनोरंजन करने वाली गणिकाओं के मध्य उलझकर रह गया। अतः संगीत का शनैःशनैः पतन होने लगा। यदि किसी सभ्य घर की स्त्री के सम्बन्ध में यह पता चले कि वह संगीत में रुचि रखती है तो वह परिवार वालों के लिए लज्जा की बात समझी जाती थी। ऐसे में केवल संगीत द्वारा धनोर्पाजन करने वाली नारियों ने ही समाज के विरोध को सहते हुए भी कला का प्रदर्शन किया। ये महिलायें उच्च जाति की नहीं थीं। अतः उच्च वर्ग की स्त्रियों को उन जीविका प्राप्त करने वाली स्त्रियों से भिन्न दर्शाने के लिए समाज ने नृत्य व संगीत की शिक्षा को नारी के लिए अनुचित बताया। इसके बाद उन्हें 'गणिका' कहा जाने लगा और उनके व्यवसाय को 'वेश्यावृत्ति' का नाम दे दिया गया। वे गणिका, वरांगना, भोग्या, वैश्या, देवदासी, नायिका, राजनर्तकी के रूप में कभी ठगी जाती रहीं तो कभी अस्मिता के व्यापार में उलझी रहीं, इन्हीं उलझती सुलझती स्थितियों में ये कलाधिष्ठानियाँ अपनी दृढ़ इच्छा शक्ति के साथ संगीत को समर्पित हो अपना सर्वोच्च प्रदान करने में कहीं शिथिल नहीं पड़ी तथा अपने सृजनात्मक स्वभाव के अनुरूप वो विरोधाभासी स्थितियों के बीच से अपनी रचनात्मक प्रवृत्ति का परिचय देती हुई मार्ग प्रशस्त करती रही।

मध्यकाल में संगीत के क्षेत्र में महिलाओं की स्थिति मिश्रित थी। यद्यपि संगीत की अभिजात शैलियों पर पुरुषों का एकाधिकार था और महिलाओं को सामाजिक तथा धार्मिक प्रतिबंधों का सामना करना पड़ता था, फिर भी उन्होंने संगीत के क्षेत्र में अनेक कठिनाइयों के बावजूद अपनी विशिष्ट पहचान बनाए रखी। इस संपूर्ण काल खण्ड में मीरा ही एक ऐसा नाम था जिसने सामाजिक बंधनों और अत्याचारों का मुकाबला करके नारी जाति को आशा की एक किरण दिखाई। अक्का महादेवी, तमिल वैष्णव संत-कवयित्री आंडाल, कश्मीर की संत-कवयित्री लल डेड, महाराष्ट्र की वारकरी परंपरा की संत जनाबाई, इसी प्रकार मराठी संत-कवयित्री बहिणाबाई इत्यादि संत-कवयित्रियों द्वारा रचित पद, भजन, वचन, वाख तथा अभंग आज भी भारतीय शास्त्रीय संगीत, लोक एवं भक्ति-संगीत की विविध परंपराओं में समान श्रद्धा और लोकप्रियता के साथ गाए जाते हैं तथा भारतीय सांस्कृतिक विरासत के अमूल्य अंग के रूप में प्रतिष्ठित हैं। इनकी रचनाएँ न केवल आध्यात्मिक चेतना और भक्तिभाव को अभिव्यक्त करती हैं, बल्कि इनके योगदान से भारतीय संगीत की धार्मिक, सांस्कृतिक, साहित्य और लोक परंपराएँ सुदृढ़ हुईं तथा संगीत की समृद्ध विरासत आने वाली पीढ़ियों तक सुरक्षित रही। गायन, वादन, नृत्य तथा

संगीत-रचना के माध्यम से उन्होंने भारतीय संगीत परंपरा को समृद्ध किया और भक्ति परंपरा के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

मुगलकालीन साम्राज्य में महिलाओं का संगीत में योगदान –

मुगल काल में कई राजाओं और नवाबों के दरबारों में महिला गायिकाएँ और नर्तकियाँ संगीत एवं नृत्य की प्रतिष्ठित कलाकार थीं और अनेक राज्यों और मुगल दरबारों में महिला गायिकाओं और नर्तकियों को संरक्षण प्राप्त था। विशेषकर अकबर के दरबार में, महिलाएँ शास्त्रीय संगीत में अपनी कला का प्रदर्शन करती रहीं। रूपमती और नूरजहाँ जैसी कलाकार अपने समय की प्रमुख संगीतज्ञ थीं। मुगल तथा अन्य राजदरबारों में अनेक महिला गायिकाएँ और नर्तकियाँ शास्त्रीय संगीत, नृत्य और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का महत्वपूर्ण हिस्सा थीं और उन्होंने ध्रुपद, लोक तथा दरबारी संगीत की परंपराओं को संरक्षित, लोकप्रिय और विकसित करने में योगदान दिया, हालांकि उनमें से कई के नाम ऐतिहासिक स्रोतों में सुरक्षित नहीं हैं।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि वैदिक काल से मध्यकाल तक हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के विकास, संरक्षण तथा संवर्धन में महिला कलाकारों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण, सतत एवं बहुआयामी रही है। भारतीय संगीत की ऐतिहासिक यात्रा का सम्यक् विश्लेषण यह सिद्ध करता है कि महिलाओं का योगदान केवल सहायक अथवा सीमित सहभागिता तक नहीं था, बल्कि वे संगीत परंपरा की सृजनकर्ता, संरक्षिका, संवाहिका तथा प्रेरक शक्ति के रूप में निरंतर सक्रिय रहीं। गार्गी, मैत्रेयी, लोपामुद्रा जैसी विदुषी महिलाओं ने ज्ञान, आध्यात्मिकता और संगीत को एक-दूसरे के पूरक रूप में स्थापित किया। रामायण, महाभारत, बौद्ध, जैन तथा गुप्तकालीन साहित्य में भी महिलाओं की सांगीतिक प्रतिभा का निरंतर उल्लेख प्राप्त होता है, जिससे स्पष्ट होता है कि संगीत शिक्षा एवं सांस्कृतिक जीवन में उनका स्थान अत्यंत सम्मानजनक था।

सृष्टि के प्रारम्भ से ही प्रत्येक युग में धार्मिक एवं सामाजिक उत्सवों के आयोजन की समृद्ध परम्परा रही है, जिनमें संगीत का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। इन संगीत उत्सवों ने तत्कालीन संगीत कला के संरक्षण के साथ-साथ उसके विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वैदिक काल में समन, पौराणिक काल में समज्जा, महाकाव्य काल में पुष्प-चयन, जल-क्रीड़ा तथा उद्यान-क्रीड़ा जैसे सांगीतिक उत्सव, बौद्ध काल में गिरग एवं समज्ज, तथा मौर्य, कुषाण (कनिष्क) एवं गुप्त काल में संगीत समारोहों के दरबारी स्वरूप के विकास में महिला कलाकारों की भूमिका ने इन आयोजनों के स्वरूप, उद्देश्य तथा प्रभाव को निरन्तर विस्तृत और समृद्ध किया। प्राचीन भारतीय मंदिर परंपरा में देवदासियों एवं नृत्यांगनाओं ने धार्मिक अनुष्ठानों के माध्यम से संगीत एवं नृत्य को जीवंत बनाए रखने में उल्लेखनीय भूमिका निभाई। यद्यपि बाद के समय में इस व्यवस्था में अनेक सामाजिक विकृतियाँ उत्पन्न हुईं, तथापि यह भी सत्य है कि इन्हीं परंपराओं ने संगीत, नृत्य तथा अभिनय की अनेक विधाओं के संरक्षण में महत्वपूर्ण योगदान दिया। मंदिरों, राजदरबारों तथा सांस्कृतिक संस्थानों के माध्यम से महिलाओं ने संगीत की परंपरा को पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित करने का कार्य किया।

मध्यकालीन समाज में राजनीतिक अस्थिरता, विदेशी आक्रमणों, पर्दा-प्रथा तथा सामाजिक रूढ़ियों के कारण महिलाओं की संगीत संबंधी स्थिति पूरी तरह समान नहीं थी। किन्तु तब भी उनके सांगीतिक योगदान का प्रवाह कभी पूर्णतः अवरुद्ध नहीं हुआ। सामाजिक सीमाओं के बावजूद उन्होंने भक्ति-संगीत, लोकसंगीत, मंदिर-संगीत, दरबारी संगीत और लोकजीवन में गायन, वादन और नृत्य के माध्यम से संगीत के विकास, संरक्षण और प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान दिया। मीरा, अक्का महादेवी, आंंडाल, लल डेड, जनाबाई, बहिणाबाई आदि संत-कवयित्रियों ने अपने पदों, भजनों, वचनों, अभंगों एवं भक्तिगीतों के माध्यम से भारतीय संगीत को आध्यात्मिक, साहित्यिक एवं

सांस्कृतिक समृद्धि प्रदान की। उनकी रचनाएँ आज भी हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत, भक्ति-संगीत एवं लोकसंगीत की विविध परंपराओं का अभिन्न अंग हैं। मुगलकाल में यद्यपि संगीत का स्वरूप राजाश्रय एवं दरबारी संस्कृति से प्रभावित हुआ, फिर भी अनेक महिला कलाकारों ने गायन, वादन एवं नृत्य की परंपराओं को जीवित रखा। रूपमती, नूरजहाँ तथा अनेक अन्य दरबारी कलाकारों ने अपनी कलात्मक प्रतिभा के माध्यम से शास्त्रीय संगीत की परंपराओं के संरक्षण एवं विकास में उल्लेखनीय योगदान दिया। यद्यपि इतिहास में अनेक महिला कलाकारों के नाम पर्याप्त रूप से सुरक्षित नहीं रह सके, तथापि उपलब्ध ऐतिहासिक साक्ष्य उनके प्रभाव और योगदान को प्रमाणित करते हैं।

अंततः यह कहा जा सकता है कि हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की समृद्ध परंपरा का निर्माण केवल पुरुष संगीतज्ञों के प्रयासों का परिणाम नहीं है, बल्कि इसमें महिला कलाकारों की साधना, सृजनशीलता, आध्यात्मिक दृष्टि, सांस्कृतिक प्रतिबद्धता तथा कलात्मक उत्कृष्टता का समान रूप से महत्वपूर्ण योगदान रहा है। भारतीय संगीत की यह विरासत महिलाओं के निरंतर समर्पण, संघर्ष और सृजनात्मक ऊर्जा से ही समृद्ध और जीवंत बनी रही है। इसलिए भारतीय संगीत के इतिहास में महिला संगीतज्ञों को केवल सहयोगी नहीं, बल्कि भारतीय सांगीतिक परंपरा की प्रमुख निर्मात्री, संवाहिका और विकासकर्ता के रूप में मान्यता प्रदान किया जाना समय की आवश्यकता है। यह अध्ययन इसी ऐतिहासिक सत्य को स्थापित करने का एक विनम्र प्रयास है।

सन्दर्भ-ग्रन्थ सूची

1. अथर्ववेद, (गीता प्रेस संस्करण), गोरखपुर, गीता प्रेस।
2. महाभारत, (गीता प्रेस संस्करण), गोरखपुर, गीता प्रेस।
3. रामायण (वाल्मीकि), (गीता प्रेस संस्करण), गोरखपुर, गीता प्रेस।
4. ऋग्वेद, (गीता प्रेस संस्करण), गोरखपुर, गीता प्रेस।
5. यजुर्वेद, (गीता प्रेस संस्करण), गोरखपुर, गीता प्रेस।
6. अग्रवाल, वासुदेव शरण, (2012), निबंध संगीत, भारतीय संगीत की प्राचीन परंपरा, हाथरस (उ.प्र.), संगीत कार्यालय।
7. अहोबल, पण्डित, (2018), संगीत परिजात (नवीन संस्करण), वाराणसी, चौखम्बा संस्कृत सीरीज/चौखम्बा संस्कृत संस्थान।
8. भातखंडे, विष्णु नारायण (1990), हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति, लखनऊ, संगीत कार्यालय।
9. पलुस्कर, विष्णु दिगम्बर, (2008), संगीत बालप्रकाश, मुंबई, अखिल भारतीय गांधर्व महाविद्यालय मंडल।
10. जैन, सुनीता, (2018), भारतीय संगीत में महिलाओं का योगदान, नई दिल्ली, राधा पब्लिकेशन्स।
11. चौबे, सुशील कुमार, (2015), भारतीय शास्त्रीय संगीत का इतिहास एवं परम्परा, नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन।
12. गर्ग, लक्ष्मी नारायण (सम्पा.), (1986, जनवरी-फरवरी), संगीत (मासिक पत्रिका), पृ. 24. हाथरस (उ.प्र.), संगीत कार्यालय।
13. जोशी, उमेश, (2021), भारतीय संगीत का इतिहास, दिल्ली, कल्पना प्रकाशन।
14. परांजपे, शरच्चन्द्र, (2015), भारतीय संगीत का इतिहास, वाराणसी, चौखम्बा विद्याभवन।
15. शर्मा, भगवत शरण, (2019), भारतीय संगीत का इतिहास, हाथरस (उत्तर प्रदेश), संगीत कार्यालय।
16. श्रीवास्तव, धर्मावती, (2007), प्राचीन भारत में संगीत, दिल्ली, भारतीय विद्या प्रकाशन।

17. श्रीवास्तव, हरिश्चन्द्र, (1970), निबन्ध संगीत संग्रह (प्रथम संस्करण) इलाहाबाद (उत्तर प्रदेश), संगीत सदन प्रकाशन।
18. रानाडे, अशोक दामोदर, (2006), Hindustani Music: A Tradition in Transition. नई दिल्ली, डी.के. प्रिंटवर्ल्ड।
19. नीलकंठ शास्त्री, के. ए. (2004), दक्षिण भारत का इतिहास, नई दिल्ली, ओरिएंट लॉन्गमैन।
20. रघवन, वी. (1978), The Concept of the Nāṭya and Music in Ancient India. चेन्नई, अद्यार लाइब्रेरी।
21. देसाई, नीलिमा, (2016), Women in Indian Classical Music: Tradition and Change. नई दिल्ली, सेज पब्लिकेशन्स।
22. Subramanian, L. (2006), From the Tanjore Court to the Madras Music Academy. New Delhi, Oxford University Press.